धम्मपदः एक अनुशीलन

डॉ. आलोक भारद्वाज,

असिस्टेंट प्रोफेसर, प्राचीन भारतीय इतिहास विभाग,
विद्यांत हिन्दू स्नातकोत्तर महाविद्यालय लखनऊ।

बौद्ध पालि साहित्य में धम्मपद को अत्यन्त श्रेष्ठ स्थान प्राप्त है। धम्मपद सुत्तपिटक के खुद्दक निकाय के अन्तर्गत आता है। बौद्धों की सामान्य धारणा है कि धम्मपद में मूलतः बुद्ध–वचन संगृहीत हैं। हम धम्मपद की तिथि का निर्धारण पूरे निश्चय के साथ नहीं कर सकते हैं। प्रसिद्ध बौद्ध दार्शनिक बुद्धघोष, जिनका समय चौथी शताब्दी ईसवी के आस पास माना जाता है, के अनुसार पिटकों की रचना प्रथम बौद्ध संगीति के समय हुई थी। सातवी शती ईसवी में भारत की यात्रा पर आये चीनी बौद्ध यात्री ह्वेनत्सांग के मतानुसार त्रिपिटक पहली बौद्ध संगीति के अन्त में काश्यप के निर्देश पर लिपिबद्ध किये गये थे। महावंश के अनुसार सिंहल नरेश बट्टगामणि, जिसका शासन काल 88 से 76 ईसा पूर्व माना जाता है, के समय में त्रिपिटक पुस्तकों में इसलिये लिपिबद्ध कर दिये गये जिससे बौद्ध धर्म युगों–युगों तक जीवित रहे।[1]

धम्मपद के रचनाकाल के सम्बन्ध में प्रमुख रूप से दो प्रकार के मत अधिक प्रचलित हैं। पहला मत सुप्रसिद्ध प्राच्य शास्त्री एफ. मैक्समूलर का है। इनके मतानुसार[2] प्रारम्भ में सभी बौद्ध ग्रन्थ मौखिक परम्परा के रूप में थे जिन्हें बाद में सिंहल द्वीप (श्री लंका) के शासक बट्टगामणि के आदेश से लिखित रूप दिया गया। महावंश, जिसका रचना काल 459–477 ई. के मध्य माना जाता है, में भी इस तथ्य का उल्लेख मिलता है। दूसरे मत के अनुसार[3] सभी त्रिपिटकों का संकलन भगवान बुद्ध की मृत्यु के पश्चात् 477 ईसा पूर्व राजगृह में आयोजित प्रथम महासंगीति में किया गया था। द्वितीय और तृतीय संगीतियों में इन संकलनों को पूर्णता प्राप्त हो गई थी।

इस मत के पक्ष में बाह्य साक्ष्य भी प्राप्त होते हैं। प्रथम शताब्दी ईसवी के प्रारम्भिक वर्षों की रचना 'मिलिन्दपञ्हों' में भी 'धम्मपद' के कई उद्धरण प्राप्त होते हैं। महानिद्देस नामक ग्रन्थ 'अट्ठकवग्ग' पर शास्त्रीय भाष्य है। इस ग्रन्थ में बहुत से ऐसे वाक्य आये हैं जो केवल 'धम्मपद' में ही हैं। इस प्रकार चुल्लनिद्देस में भी ऐसे अनेक वाक्य प्राप्त होते हैं जो धम्मपद के अतिरिक्त अन्य कहीं नही प्राप्त होते। इन दोनों ग्रन्थों को दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व का माना जाता है। कथावत्यु में धम्मपद की अनेक सूक्तियों संगृहीत हैं। भिक्षु धर्मरक्षित के अनुसार धम्मपद के अप्रमाद वर्ग को सम्राट अशोक ने विद्वान् भिक्षुओं के मुख से सुना था।[4] इससे स्पष्ट है कि सम्राट अशोक के काल तक धम्मपद एक मान्यता प्राप्त ग्रन्थ बन चुका था। अशोक का समय ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी माना जाता है। अतः यह निश्चय पूर्वक कहा जा सकता है कि धम्मपद को अपनी वर्तमान अवस्था तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व तक प्राप्त हो चुकी थी। इस मत का समर्थन ए.के. वार्डर भी करते हैं उनके अनुसार धम्मपद की गाथाओं के रचना काल में काफी अन्तर है जिन्हें सामान्य रूप से तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व के आस पास का माना जा सकता है।[5]

लंका, म्यामार, थाईलैण्ड और कम्बोडिया आदि में बौद्ध स्थविरवाद राष्ट्र धर्म है। पालि–त्रिपिटक' उनके सर्वमान्य ग्रन्थ है। इन

देशों में समय–समय पर त्रिपिटकों के सुन्दर संस्करण अपनी–अपनी भाषा में प्रकाशित होते रहे हैं।

प्रथम बौद्ध संगीति में आनन्द ने बुद्ध के उपदेशों का जो वाचन किया वे 'सुत्तपिटक के अन्तर्गत रखे गये। उपालि जो कि विनय का विशेषज्ञ था, ने नियमों का पाठ किया जिन्हें, 'विनय पिटक' के अन्तर्गत रखा गया। इसके अन्तर्गत नियमों, उनके बनाने के कारणों, समय–समय पर उनमें किये गये परिवर्तनों और उनकी टीकाओं के अन्तर्गत बुद्ध के उपदेशों का सम्यक् विवेचन किया गया है। अशोक के काल तक बुद्ध के उपदेश दो भागों में ही थे। तृतीय संगीति में अभिधम्म की रूप रेखा निश्चित की गई थी।[6]

महात्मा बुद्ध के लोकोपकारी उपदेशों और संवादों का परिचय सुत्तपिटक में है। सुत्त शब्द पालि का है जिसका संस्कृत समतुल्य सूक्त या सूत्र शब्द है। अशोक के काल से पहले बुद्ध के उपदेशपरक वचनों को सुत्त कहते थे। सुत्तपिटक के अन्तर्गत पाँच निकाय हैं– दीघ निकाय, मज्झिम निकाय, संयुक्त निकाय, अंगुतर निकाय और खुद्दक–निकाय। धम्मपद खुद्दक निकाय के अन्तर्गत आता है। धम्मपद के साथ–साथ 14 अन्य ग्रन्थ भी खुद्दक निकाय के अन्तर्गत आते हैं।

धम्मपद पालि साहित्य का एक अनुपम ग्रन्थ रत्न है। ब्राह्मण परम्परा में जो स्थान 'गीता को प्राप्त है वही स्थान श्रमण परम्परा में धम्मपद को प्राप्त है। त्रिपिटकों में यह अत्यधिक महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। बौद्ध दर्शन के प्रमुख सिद्धान्तों का बीज रूप इस ग्रन्थ में प्राप्त होता है। धम्मपद में भगवान बुद्ध द्वारा बुद्धत्व प्राप्ति से लेकर निर्वाण प्राप्ति तक अपने शिष्यों को जो उपदेश दिये थे, उनके महत्वपूर्ण अंश संकलित हैं। भगवान बुद्ध ने पैतालीस वर्षों तक जन सामान्य के बीच जाकर उपदेश दिये थे। उन्होंने यथाशक्ति विभिन्न नगरों और राज्यों की यात्रा की। धम्मपद में उल्लिखित कथा स्थल वे स्थान है जहाँ भ्रमण के दौरान बुद्ध ने उपदेश किये थे। धम्मपद की गाथाओं में सर्वाधिक गाथाओं का उपदेश बुद्ध ने जेतवन में दिया था। धम्मपद की लगभग 185 गाथायें जेतवन में उपदिष्ट हैं जो कि श्रावस्ती के अन्तर्गत आता है। जेतवन के अतिरिक्त राजगृह, कौशाम्बी, श्रावस्ती, कोशल, कपिलवस्तु आदि स्थानों पर भी बुद्ध ने इन गाथाओं का उपदेश दिया था। धम्मपद में वर्णित सभी उपदेश–स्थल वर्तमान बिहार राज्य में स्थित हैं।

'धम्मपद' शब्द के अनेक अर्थ हैं। इसकी व्याख्या भिन्न–भिन्न विद्वानों ने अपने–अपने ढंग से की है। 'धम्म' शब्द संस्कृत के धर्म शब्द का पालि रुपान्तर है। बौद्ध साहित्य में 'धम्म शब्द का प्रयोग व्यापक अर्थों में किया गया है और इसके लिए एक सर्वमान्य परिभाषा निश्चित करना जटिल कार्य है। 'धम्म को अनेक अर्थों में ग्रहण किया गया है जैसे अनुशासन, कानून अथवा धर्म।[7] इसका अर्थ प्रसंगानुसार ही लगाया जा सकता है। अधिकांशतः इसका प्रयोग बुद्ध द्वारा उपदेशित धर्म के लिये किया गया है जिसका प्रत्येक बौद्ध द्वारा पालन अपेक्षित है। 'धम्मपद' में धम्म शब्द सदाचार के लिये प्रयुक्त हुआ है, क्योंकि धम्मपद के प्रमुख प्रतिपाद्य–अप्रमाद, अहिंसा, अस्तेय, अक्रोध, अपरिग्रह, अवैर आदि सदाचार के अन्तर्गत ही आते हैं।

'धम्म के समान 'पद' के भी अनेक अर्थ है जिनमें स्थान, निर्वाण, सुरक्षा, शब्द, कारण, पदचिह्न हो सकता है। पद एक अन्य अर्थ गाथा या वाक्य की पंक्ति भी होता है, अतः 'धम्मपद का अर्थ धर्म सम्बन्धी वाक्य या गाथा भी है।[9] धम्मपद की गाथाओं में भी 'धम्मपद' शब्द का प्रयोग मिलता है।[9] बुद्ध द्वारा दिये गये उपदेशों को भिक्षु उनके जीवन के काल में ही कण्ठस्थ करने लगे थे। सुत्तनिपात के 'अठ्ठगवग्ग' को बुद्ध के एक शिष्य ने उनके सम्मुख सस्वर सुनाया था।

धम्मपद भी इसी प्रकार कण्ठस्थ किया जाता था।[10]

धम्मपद खुद्दक निकाय के अन्तर्गत एक स्वतंत्र ग्रन्थ है जिसकी 423 गाथायें 26 वर्गों में विभाजित है। धम्मपद के अन्तर्गत बुद्ध के उपदेश ही हैं। ये उपदेश आरम्भ में श्रुति परम्परा से चलते रहे। प्रतिपाद्य विषय की दृष्टि से धम्मपद की रचना बुद्ध के निर्वाण से पूर्व हुई है और इसे वर्तमान स्वरूप अशोक के समय तक प्राप्त हो चुका था। धम्मपद में प्रधानतः नैतिक सदाचार का प्रतिपादन मिलता है, जिसके अनुरूप स्वयं को ढाल कर व्यक्ति दुःखों से मुक्ति प्राप्त कर लेता है। बौद्ध धर्म की सामान्य विशेषताओं के दर्शन भी धम्मपद में होते हैं। मनुष्यों का जीवन निराशा से भरा हुआ है, सर्वत्र दुःख का साम्राज्य है, इन दुःखों से मुक्ति किस प्रकार प्राप्त की जा सकती है, दुःख मुक्ति की अवस्था का क्या स्वरूप है आदि मानव जीवन से सम्बन्धित प्रश्नों पर धम्मपद में विचार किया गया।

धम्मपद में 26 अध्याय–वग्ग–हैं; यमक वग्गो, अप्पमाद वग्गो, चित्त बग्गो, पुप्फ वग्गो, वाल वग्गो, पण्डित वग्गो, अर्हन्त वग्गो, सहस्रा वगो, पाप वगो, दण्ड बग्गो, जरा वग्गो, अत्त वग्गो, लोक वग्गो, बुद्ध बग्गो, सुख वग्गो, पिय बग्गो, कोष वग्गो, मल वग्गो, धम्मट्ट वग्गो, मग्ग बग्गो, पकिण्णक वग्गो, निरय वग्गो, नाग वग्गो, तण्हा वग्गो, भिक्खु वग्गो और ब्राह्मण बग्गो। वग्गों का यह वर्गीकरण मुख्यतः उस उस विषय को ध्यान में रखकर किया गया है, जिस–जिस शब्द या विषय की गाथा उसमें विशेष रूप से आयी है, प्रतिपादित विषय अथवा शैली के आधार पर उन वर्गों का नामकरण किया गया है। उदाहरण के लिए यमकवग्ग प्रथम वर्ग है। इसमें अधिकांश ऐसे उपदेशों का संग्रह है जिनमें दो–दो बातें युग्म रूप में आती हैं। इनके द्वारा प्रत्येक बात के दोनों पक्षों पर विचार किया गया है। उदाहरण के लिये एक स्थल पर कहा गया है जो मनुष्य असंयत रहता है, उसे मार गिरा देता है और जो मनुष्य संयत रहता है उसे मार नहीं गिरा सकता।[11] इसी प्रकार दूसरे वर्ग 'अप्पमादवग्ग' में अप्रमाद की प्रशंसा की गई है।

धम्मपद में एक से एक अनूठी गाथायें रत्नों की तरह जगमगा रही है, हर गाथा आपके चित को आलोकित कर देगी। प्रमाद की निंदा, चित्त संयम की महत्ता, पुण्य संग्रह का महत्व, मूर्ख और पंडित के लक्षण, अर्हतों, भिक्षुओं, ब्राह्मणों आदि के लक्षण, पाप कर्म से बचाव, आत्मोन्नति का मार्ग आदि विषयों पर भगवान तथागत के उपदेशों से धम्मपद गुंथा हुआ है।

जीवन का स्वरूप, आर्य सत्यों की प्रतिष्ठा, त्रिशरण, दुःखों से मुक्ति का मार्ग, सदाचार, निर्वाण प्राप्ति का मार्ग, स्वावलम्बन आदि धम्मपद के प्रमुख प्रतिपादय हैं। इस ग्रन्थ के अनुशीलन से ज्ञात होता है कि धम्मपद में नीति सम्बन्धी वे सभी आदर्श समाहित हैं जो भारतीय समाज और संस्कृति की सामान्य निधि हैं।[12]

धम्मपद के सम्बन्ध में ए. के. वार्डर का यह कथन द्रष्टव्य है– "इस संग्रह की सर्वाधिक प्रमुख विशेषता इसका लोकप्रिय एवं अशास्त्रीय चरित्र है जो बौद्ध धर्म के सामाजिक आदर्शों को व्यक्त करता है और बहुत हद तक अशोक द्वारा अपनायी जा रही नीतियों और व्यवहार के अनुरूप है।"[13]

शील, समाधि और प्रज्ञा का धम्मपद की गाथाओं में बड़ी सहजता एवं सुन्दरता के साथ वर्णन किया गया है। मानव चरित्र का उत्थान करने वाले बहुमूल्य जीवन सूत्र इस ग्रन्थ में प्राप्य हैं। यह ग्रन्थ दिशा सूचक यन्त्र के समान है जो भटके हुए जहाजों को गन्तव्य तक पहुंचाता है। इस सम्बन्ध में भरत सिंह उपाध्याय के विचार उल्लेखनीय है– "धम्मपद को इस प्रकार बौद्धों की गीता कहना चाहिये। सिंहल में बिना धम्मपद का पारायण किये किसी बौद्ध भिक्षु की उपसम्पदा

नहीं होती। वर्मा, स्याम, कम्बोडिया और लाओस में भी धम्मपद का कण्ठस्थ होना प्रायः प्रत्येक भिक्षु के लिये आवश्यक माना जाता है। बुद्ध उपदेशों का धम्मपद से अच्छा संग्रह पालि साहित्य में नहीं है। इसकी नैतिक दृष्टि जितनी गम्भीर है उतनी ही प्रसाद गुण से पूर्ण भी है।"[14]

एल्बर्ट जे. एडमण्ड ने धम्मपद के अंग्रेजी अनुवाद की भूमिका में लिखा है– "यदि एशिया खण्ड में कभी किसी अविनाशी ग्रन्थ की रचना हुई है, तो वह यह है। इसके पदों ने अनेक विचारकों के हृदय में चिन्तन की आग लगायी है। इन्हीं से प्रभावित होकर अनेक चीनी यात्री मंगोलिया के भयानक कान्तार और हिमालय की अलंध्य चोटियाँ लांघ कर भगवान बुद्ध के चरणों से पूत भारत भूमि के दर्शनार्थ आये। बुद्ध के धर्मपदों की प्रेरणा से ही महाराजा अशोक ने अपने राज्य में प्राण दण्ड का निषेध किया था और मनुष्यों तथा जानवरों तक के लिये अस्पताल खोले थे।"

धम्मपद हमें बौद्ध धर्म के मूल स्वरूप को समझने में सहयोग प्रदान करता है। इसमें वर्णित आदर्श जीवन पद्धति हमे पग–पग पर राह दिखाती है। भगवान बुद्ध के ये उपदेश समस्त मानव जाति के कल्याण की सामर्थ्य रखते हैं। धम्मपद की आधुनिक जीवन में उपादेयता को रेखांकित करते हुए आचार्य बिनोवा भावे ने धम्मपदं (नव–संहिता) की प्रस्तावना में लिखा है– "इधर ज्ञानदेव, कबीर और नानक आदि संतों की सिखावन, उधर उपनिषद और गीता की सिखावन, दोनों के बीच धम्मपद मुझे एक जोड़ने वाली कड़ी मालूम हुआ और उस दृष्टि से मैंने धम्मपद का अधिक सूक्ष्म अध्ययन किया तो धम्मपद के वचनों का एक व्यवस्थित क्रम मेरे मन में स्थिर हुआ।"

आज जबकि समस्त विश्व भौतिकता की अन्तहीन दौड़ में जुटा हुआ है, सहिष्णुता, अहिंसा, त्याग, मानवता, लोक कल्याण आदि समस्त सदभावनायें उपेक्षित हैं, धम्मपद की गाथाओं में गुंथी हुई शिक्षायें विश्व मानव को सन्मार्ग का ज्ञान करा सकती हैं। व्यक्ति का नैतिक और आध्यात्मिक उन्नयन में करने वाले विभिन्न विचार–बिन्दु धम्मपद की गाथाओं को अभिसिंचित किये हुए हैं। धम्मपद में प्रस्तुत जीवन–पथ परमार्थ की प्राप्ति कराने में समर्थ है। धम्मपद के सम्बन्ध में भदन्त आनन्द कौसल्यायन का यह कथन बिल्कुल उचित है कि यदि केवल एक पुस्तक को जीवन भर साथी बनाने की कभी इच्छा हो, तो विश्व के पुस्तकालय 'धम्मपद' से बढ़कर दूसरी पुस्तक मिलनी कठिन है।'[15]

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. महावंस पृ. 7
2. सैक्रेड बुक्स ऑफ द ईस्ट, जिल्द–10, भूमिका
3. ओरिजिन्स आफ बुद्धिज्म, अध्याय–1
4. भिक्षु धर्मरक्षित, धम्मपद की भूमिका, पृ. 4
5. वार्डर, ए. के. इण्डियन बुद्धिज्म, पृ. 279
6. द. कोसम्बी, धर्मानन्द, भगवान बुद्ध : जीवन और दर्शन
7. नारदथेर, धम्मपद की भूमिका, मैक्समूलर एफ. जिल्द–10 धम्मपद की भूमिका और आगे, राधाकृष्णन, धम्मपद की भूमिका
8. उपाध्याय, भरत सिंह, पालि साहित्य का इतिहास, पृ. 238
9. धम्मपद गाथा सं. –44, 45
10. संयुक्त निकाय, पियंकर सुत
11. धम्मपद गाथा सं. –7–8
12. लाहा, विमलचन्द्र, हिस्ट्री ऑफ पालि लिट्रेचर जिल्द–1, पृ. 200–214
13. वार्डर, ए. के., इण्डियन बुद्धिज्म, पृ. 279
14. उपाध्याय, भरत सिंह, पालि साहित्य का इतिहास पृ. 238
15. कौसल्यायन, भदन्त आनंद, धम्मपद की भूमिका, पृ. 1

Copyright © 2014, Dr. Alok Bharadwaj. This is an open access refereed article distributed under the creative common attribution license which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.